APPOINTMENTS

परिस्थितिजन्य सिद्धान्त (Situational Theory)

परिस्थितिजन्य सिद्धान्त के अनुसार समूह के नेता का निर्धारण व्यक्ति के शीलगुणों के आधार पर नहीं, बल्कि समूह की वर्तमान परिस्थिति या समय के द्वारा होता है। इसलिए इस सिद्धान्त को समय सिद्धान्त या zeitgeist theory भी कहा जाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार नेता जन्मजात नहीं, बल्कि परिस्थितियों में रहकर उत्पन्न होते हैं। Feldman (1985) ने इस सिद्धान्त की व्याख्या करते हुए कहा है कि "परिस्थितिजन्य सिद्धान्त यह बतलाता है कि कोई खास व्यक्ति एक परिस्थिति में नेता हो सकता है, परंतु दूसरे में नहीं क्योंकि परिस्थिति की विशेषताओं द्वारा न कि व्यक्ति की विशेषताओं द्वारा नेतृत्व की प्राप्ति होती है।" अतः कहा जा सकता है कि इस सिद्धान्त के अनुसार समूह का नेता कौन होगा, इसका निर्धारण परिस्थिति या समय द्वारा होता है। जैसे- भारत में यदि श्रीमती इंदिरा गाँधी की हत्या न हुई होती तो, शायद ही राजीव गाँधी को कांग्रेस पार्टी का प्रमुख चुना जाता और वे प्रधानमंत्रियों बन पाते।

समकालीन मनोवैज्ञानिकों ने अनेक अध्ययनों के द्वारा विशेष समूह परिस्थिति या समय की विशेषताओं के पहचान की कोशिश की है, जिनसे समूह नेतृत्व का उद्भव होता है। जैसे — संकटकालीन परिस्थिति, समूह की आवश्यकताएँ आदि।

परिस्थितिजन्य सिद्धान्त की कुछ आलोचनाएँ भी मनोवैज्ञानिकों द्वारा की गयी हैं, जो निम्नांकित हैं—

→ इस सिद्धान्त द्वारा इस तथ्य की व्याख्या नहीं हो पाती है कि एक ही परिस्थिति होने पर भी क्यों कुछ लोग हमेशा नेता बने रहते हैं तथा कुछ लोग हमेशा अनुयायी ही बने रहते हैं।

→ यह सिद्धान्त यह भी नहीं बता पाता है कि किस परिस्थिति विशेष में कौन व्यक्ति नेता बन जायेगा और कौन नहीं?

NOTES

अतः कौन व्यक्ति नेता बनने जा रहा है, इसका पूर्वानुमान इस सिद्धान्त द्वारा करना संभव नहीं है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि नेतृत्व के उद्भव की व्याख्या करने में परिस्थितिजन्य सिद्धान्त भी उसी तरह अधूरा है, जिस तरह शीलगुण सिद्धान्त। अतः नेतृत्व का एक आदर्श सिद्धान्त वह होगा जो व्यक्ति के शीलगुणों एवं परिस्थिति की विशेषताओं दोनों को ध्यान में रखता हो। मनोवैज्ञानिकों ने पारस्परिकता सिद्धान्त के अन्तर्गत इस पर बल डाला है।